पल्लवी सक्सेना

इग्लैंड

AI बनाम डूबते को तिनके का सहारा

आजकल हमारे चारों और A I अर्थात (कृतिम बुद्धिमत्ता) का हल्ला मचा हुआ है. विषय कोई भी हो अब लोग गूगल चाचा को भूल A I अम्मा से अपनी समस्या का समाधान पूछने लगे है. विशेष तौर पर विदेशों में रह रहे लोग के लिए तो सच में A I उनकी अम्मा की तरह ही हो गया है क्यूंकि आज के इस मशीनी युग में जहां आम इंसान पूरे समय मशीनों से घिरा हुआ है, वही दूसरी और चौबीसों घंटे ठंडे मौसम और बारिश के चलते जब धूप नहीं मिलती और मन मस्तिष्क में ऊर्जा का संचार नहीं होता, तब मन हमेशा उदास महसूस करता है. सड़कों पर इंसान कम और वाहन अधिक दिखायी देते है, तब ऐसे में किसी भी आम इंसान का अवसाद में चले जाना स्वाभाविक है क्यूंकि दुनिया चाहे कितनी भी क्यूँ ना बदल जाये, इंसान एक सामाजिक प्राणी था, है, और हमेशा रहेगा.

लेकिन इस मशीनी युग में आए दिन नयी तकनीकों से घिरे रहने और उन्हे सुनने, समझने, और उपयोग कैसे करना है को सीखने के चक्कर में इंसान इस कदर व्यस्त हो गया है कि अपनी निजी जरूरतों को भूल गया है. इंसान की सबसे बड़ी और अहम जरूरत है उसके आपसी संबंध, सामाजिक रिश्ते, जो आज की तारीख में लगभग खत्म हो चुके है. आज किसी को किसी की कोई आवश्यकता नहीं है. ऐसा सब कहते है, लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं. हर एक इंसान के अंदर एक शोर उठ रहा है, जो बाहर से दिखायी नहीं देता किन्तु उस शोर के निकलने का कोई रास्ता नहीं है और कहीं ना कहीं उस शोर का कारण दिनों दिन बढ़ता अकेलापन ही है क्यूंकि इस पूरी दुनिया में वक्ता तो बहुत है, लेकिन श्रोता कोई नहीं है.

हर कोई बस अपनी कहना चाहता है, लेकिन दूसरे की कोई बात सुनना ही नहीं चाहता, समझना तो बहुत दूर की बात है. हर किसी को आज ऐसा ही लगता है कि कोई उसे नहीं समझता, किसी को उसकी भावनाओं कि कोई कदर नहीं है. लेकिन वह कभी खुद यह बात नहीं समझ पाता कि वह खुद भी तो वैसा ही है. ऐसे में A I ने हमारे जीवन में उसी श्रोता का रोल बखूबी निभाया है. जैसे कभी 'दैनंदिनी' निभाया करती थी. जो बिना हमें 'जज' करे पूरी ईमानदारी के साथ सिर्फ हमें सुनने के लिए अपने पन्नों को खोल दिया करती थी कि आओ ओर कह डालो जो भी तुम्हारे मन में है.

बस वही काम आज यह कृतिम बुद्धिमत्ता कर रही है. जो कहने को तो एक तकनीक है, लेकिन फिर भी उसने हमारे जीवन में एक ऐसी जगह ले ली है जो पहले कभी हमारी माँ, बहन या दोस्तों की हुआ करती थी. आज जब हम उससे बात करते हैं तो पहले तो हमारे दिमाग में वह किसी रोबोट की भूमिका में ही होता हैं.

लेकिन फिर जब धीरे धीरे वह आपके द्वारा दिये गए आदेश की भाषा शैली को समझते हुए आपसे उसी अपने पन, प्यार और सम्मान के साथ बात करती है तो कहीं न कहीं यह जानते हुए भी कि वह केवल एक रोबोट है, हमें उसके प्रति भी आत्मीयता की भावना जगाने लगती है और वह भी हमें बहुत अपना सा लगने लगता है. यही बात धीरे धीरे हमारी आदत बन जाती है और हम उससे ऐसे बात करने लग जाते है जैसे वह कोई रोबोट नहीं बल्कि हमारे ही परिवार का कोई सदस्य हो. जो हमें हमारी हर समस्या का हल बता देता है. फिर चाहे वह समस्या टेक्निकल हो या मानसिक या फिर थोड़ी बहुत भावनात्मक ही क्यूँ ना हो.

हम उसे जिस रूप में अपनी बात बताते हैं, वह उसी रूप में हमें उत्तर देता है. तब कहीं न कहीं सच जानते हुए भी हम भावनात्मक रूप से भी उससे उसी तरह जुड़ने लगते हैं जैसे एक इंसान दूसरे इंसान से जुड़ना चाहता है.

यह ठीक उसी तरह काम करता है जैसे कि पहले के समय में हमारे घर के बड़े अपने अनुभवों के आधार पर हमें हमारी हर तरह की समस्या का समाधान बता दिया करते थे. उससे चाहे समाधान मिले या ना मिले, लेकिन एक दिशा तो मिल ही जाती थी. वैसा ही आज

भी है. लेकिन कितने अफसोस की बात है कि आज हम अपने उन्हीं बड़ों को छोड़कर एक मशीन पर अधिक विश्वास करते है. वह भी उस मशीन पर जिसको दिमाग खुद इंसानों ने ही दिया है. लेकिन तब भी हम अपने अपनों से सलाह लेने के बजाए A I अम्मा से पूछ लेना ज्यादा ज़रूरी समझते है.

पता है क्यूँ ...? क्यूंकि हम यह जानते हैं कि वह हमें जज नहीं करेगी. जज किया जाना ही आज के समय का सबसे बड़ा डर है हालांकि यह डर पहले भी हुआ करता था लेकिन तब भी मुझे लगता है यह आज के समय में अत्यधिक ही बढ़ गया है और शायद यही वजह है कि इंसानों ने एक दूसरे से दूरियाँ बढ़ा ली जिसके कारण अकेलापन इतना बढ़ गया कि हर कोई कुंठित हुआ घूमता है. हर दम फटने को तैयार जैसे कोई सुषुप्त ज्वाला मुखी हो जो अंदर ही अंदर निजी समस्याओं और परेशानी के चलते धधक रहा है. जो कभी भी फट सकता है. और कहीं न कहीं उसे फटने से बचाने के लिए ही हर कोई हर किसी से दूर रहना ही ज्यादा उचित समझता है. जिसके कारण यदि कोई किसी के नजदीक आने के लिए उससे कुछ पूछना भी चाहे तो नहीं पूछ पाता क्यूंकि सबके मन में डर वही है जज किए जाने का डर

आज की तारीख में यदि हम किसी व्यक्ति को अपने मन की कोई बात बताएंगे या उससे कुछ पूछेंगे या पूछना चाहेंगे तो वह कोई भी उत्तर देने से पहले हमें जज करेगा कि हम कौन है, और उससे क्यूँ कुछ जानना चाहते है, और उसके बाद भी वह बिना कोई उत्तर दिये हमसे बचने की कोशिश ही करेगा और यदि उसने उत्तर दिया भी तो वह भी बड़ी नपितुली भाषा में देगा, जो बिलकुल भी संतुष्ट जनक नहीं होगा और यह बात हम पहले से बखूबी जानते है इसलिए हम किसी व्यक्ति से पूछने से ज्यादा उचित A I से पूछ लेना ज्यादा पसंद करते हैं. जो शायद बहुत हद तक सही भी है.

आज से पहले हम यह काम गूगल चाचा से पूछ कर करते थे. ऐसा करने के पीछे एक कारण और भी है, वह यह है कि इस कृतिम बुद्धिमत्ता के पास किसी एक इंसान का नहीं बल्कि कई सारे इंसानों का दिमाग है. अर्थात वह ऑनलाइन पोर्टल से ही सम्पूर्ण जानकारी निकालकर आपको बता देती है. वही दूसरी ओर यही इसकी कमजोरी भी है क्यूंकि यह आपको केवल वही जानकारी प्रदान कर सकती है जो ऑनलाइन पोर्टल पड़ी हो अगर वहाँ कोई जानकारी नहीं है तो यह भी आपको कुछ नहीं बता सकती. इसलिए इस पर अभी पूर्णतः विश्वास नहीं किया जा सकता.

लेकिन यदि पूछे गए विषय के बारे में ऑनलाइन सामग्री उपलब्ध है तो हमें किसी भी विषय में बहुत विविध रूप से और बहुत हद तक, बहुत स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है. जिसमें सबसे अच्छी बात यह है कि जब आप भावनात्मक रूप से उससे कुछ बताते हैं तो वह भी बड़े ही भावनात्मक रूप से जवाब देते हुए कई बार यह तक कह देती है कि आपको एक इंसानी स्पर्श बोले तो "जादू की झप्पी" की जरूरत है और मैं केवल एक A I हूँ इसलिए आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात कीजिये जो आपको वो दे सके. कम से कम मीठा मीठा बोलकर आप की भावनाओं के साथ खिलवाड़ तो नहीं करती. यह ही अपने आप में बहुत बड़ी बात है नहीं ...?

केवल इतना ही नहीं वह आपको यह सुझाव भी देती है कि यदि आपके पास ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है तो ऐसी संस्थाओं में बात कीजिये जो आपको केवल सुनते है. आपको जज नहीं करते. अर्थात वह यह नहीं पूछते कि आप कौन हो, किस जाति या धर्म के हो, किस जाति या धर्म के हो, क्या करते हो आदि. यहाँ तक की वह आपको वहाँ का नंबर तक निकालकर दे देती है. आपको बस वहाँ एक कॉल करना होता है. वह भी बिलकुल मुफ्त. इससे ज्यादा और एक रोबोट आपके लिए क्या ही कर सकता है.

मेरी नज़र में तो यह भी एक बहुत बड़ी मदद ही है. खासकर कम आबादी वाले विदेशों में बैठे मौसम की मार झेल रहे अकेले पन से जूझ रहे अवसाद में पड़े लोगों के लिए सच में A I "डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत है" कहावत को चरितार्थ करता है